Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 5 | MAY 2020

राजस्थान की आधुनिक महिला चित्रकार

भूपत राम [1]

[1] कलाकार एवं शोधार्थी, ललित कला विभाग, जय नारायण व्यास विश्विद्यालय जोधपुर

ABSTRACT:

KEYWORDS:

प्रस्तावना-

राजस्थान में चित्रकला का इतिहास अत्यंत प्राचीन रहा है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान काल तक आते-आते चित्रकला के क्षेत्र में निरंतर नवीन बदलाव आते रहे हैं। इन्हीं बदलावों के परिणाम स्वरूप कलाकार की सृष्टि, धरातल तथा रंग चेतना के क्षेत्र में अनेक बदलाव आए हैं तो वही कलाकार की अभिव्यक्ति की स्वायत्तता में भी नवीनता देखने को मिलती है। प्रागैतिहासिक मानव के चित्रण का उद्देश्य अपने निवास स्थान को सजाना, मनोरंजन, सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा अंधविश्वास आदि रहा है वर्तमान युग तक आते-आते इन उद्देश्यों में भी परिवर्तन आया है। यदि राजस्थान के अंतर्गत प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान काल तक की दीर्घकालीन इतिहास में यदि हम चित्रकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें तो दो सौ से तीन सौ वर्ष पूर्व तक तो यदा-कदा ही प्राप्त होते हैं। चित्रकारों के संदर्भ में महिला चित्रकार एवं पुरुष चित्रकार के बारे में परिचय प्राप्त करना तो निरापद है। इसके बाद के अंतराल में जिन चित्रकारों का उल्लेख मिलता है उनमें से अधिकांश चित्रकार पुरुष चित्रकार है। यदा-कदा इक्के दुक्के महिला चित्रकारों का उल्लेख कहीं प्राप्त हो भी जाता है तो कोई आश्चर्य नहीं है। लेकिन बीसवीं सदी के बाद राजस्थान के कला परिदृश्य में जो बदलाव आया है तथा कला के शैक्षिक परिदृश्य का निर्माण हुआ है इसी के परिणाम स्वरूप अनेक महिला चित्रकार भी देखने में आती हैं।

राजस्थान की आधुनिक चित्रकला जगत में अनेक ऐसे महिला कलाकार है जिन्होंने राजस्थान के कला परिदृश्य को बदलने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सन 1941 में अहमदाबाद में जन्मी चित्रकार वीरबाला भावसार का बचपन बांसवाड़ा में व्यतीत हुआ है। ग्रामीण अंचल में व्यतीत हुआ बचपन उनके कलात्मक कार्य में भी देखा जा सकता है। इन्होंने मूर्तिकला की शिक्षा देवी प्रसाद राय चौधरी के शिष्य गुरु रसिकलाल से ली थी। वीरबाला भावसार राजस्थान विश्वविद्यालय की चित्रकला विभाग की अध्यक्ष रही है तथा अनेक राष्ट्रीय स्तर की कलात्मक गतिविधियों में भी उपस्थित रही है तथा देश विदेश में इनके द्वारा निर्मित कृतियां संरक्षित है। राजस्थान ललित कला अकादमी का कलाविद सम्मान तथा ललित कला अकादमी गुजरात पुरस्कार के अतिरिक्त प्रथम राष्ट्रीय महिला कला रत्न पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

राजस्थान के गंगानगर में 1954 में जन्मी चित्रकार अर्चना कुलश्रेष्ठ का संबंध उदयपुर यूनिवर्सिटी के चित्रकला विभाग से हैं। जहां यह उदयपुर यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर में गोल्ड मेडलिस्ट है वही चित्रकला के क्षेत्र में भी निरंतर सृजनात्मक उपक्रम करती रही है। इन चित्रों में आधुनिकता देखी जा सकती है तो वही सांस्कृतिक परिवेश की झलक भी देखी जा सकती है। इन्होंने न केवल चित्रकला के क्षेत्र में अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है बल्कि अनेक सृजनधर्मी मस्तिष्क को विकसित करने का कार्य भी शिक्षक के रूप में किया है।

राजस्थान के जयपुर में 1958 में जन्मी प्रोफेसर पुष्पा धुलर एक अन्य कलाकार हैं जिन्होंने राजस्थान की परंपरागत चित्रण तकनीक का भी अध्ययन किया है तथा 30 वर्ष से भी अधिक समय तक शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए कला विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करती रही हैं। इन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा वरिष्ठ कलाकार सम्मान तथा राज्य स्तरीय मेले में कला मेला सम्मान प्रदान किया गया है तो वही पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। इनकी कलाकृतियां वनस्थली, विद्यापीठ, मुंबई, बीकानेर, उदयपुर, जयपुर, दिल्ली, चंडीगढ़, उज्जैन आदि देश विदेश की विभिन्न स्थलों पर प्रदर्शित होती रही है।

एक अन्य चित्रकार डॉ. हेमलता कुमावत का संबंध राजस्थान के बूंदी से हैं। इन्होंने स्नातकोत्तर उपाधि राजस्थान विश्वविद्यालय से प्राप्त की है तथा स्नातकोत्तर में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त इनके शोध का विषय बूंदी म्यूरल पेंटिंग रहा है। इन्होंने राजस्थान के कला जगत में ना केवल चित्रकार के रूप में अपना योगदान दिया है बल्कि कला शिक्षक के रूप में भी 30 सालों से भी अधिक समय तक सक्रिय भूमिका निर्वाह की है। इनकी कृतियां जयपुर, दिल्ली, कोटा, बूंदी, उदयपुर, चंडीगढ़, पूना, बीकानेर, शांतिनिकेतन आदि जगह पर प्रदर्शित हो चुकी है। इनके द्वारा लिखित पुस्तक बूंदी स्थापत्य और चित्रकला कला अध्येताओं के लिए बूंदी के कलात्मक परिक्षेत्र को जानने के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इनके द्वारा निर्मित चित्र में राजस्थानी संस्कृति की झलक भी देखी जा सकती है।

1962 में राजस्थान के हिंडौन में जन्मे डॉ. मणि भारतीय की कला शिक्षा राजस्थान यूनिवर्सिटी जयपुर से हुई है तथा वह लंबे समय तक सरकारी महाविद्यालय में चित्रकला का अध्यापन कार्य करवाते हुए सेवानिवृत्त हुई है। इन्हें कोलाज कलाकार के रूप में भी जाना जाता है। इनकी कलाकृतियां भी जयपुर, बीकानेर, बूंदी, उदयपुर आदि राजस्थान के विविध क्षेत्रों के अतिरिक्त मुंबई, नई दिल्ली, उज्जैन, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, मेरठ आदि में भी प्रदर्शित हो चुकी है।

राजस्थानी कलात्मक पृष्ठभूमि में रची बसी ममता रोकना एक अन्य चित्रकार है जिनके कलाकृतियों में परंपरागत राजस्थान शैली की झलक देखी जा सकती है। एक्रेलिक रंगों में चित्रण करना तथा नारी के विविध रूपों को भी अपने कैनवास पर निर्मित करने में इन्होंने विशेष रुचि दिखाई है। ममता रोकना लगभग 30 वर्षों से कला विद्यार्थियों को कला की

शिक्षा भी प्रदान कर रही हैं।

शबनम हुसैन 1967 में जन्मी राजस्थान की एक अन्य कलाकार है जिन्होंने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर से ड्राइंग एंड पेंटिंग में स्नातकोत्तर की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की है। इनके चित्रों की प्रदर्शनी कुवेत, जापान आदि देशों में भी लग चुकी है।

राजस्थान के परिदृश्य में एक अन्य चित्रकार ऋतू जौहरी का जन्म 1969 को हुआ है। वह भारतीय परिदृश्य के विविध विषयों तथा राजस्थान के विविध आयामों को अपनी कलाकृतियों में समेटने में अपनी रुचि रखती है। इन्होंने कागज, कैनवास, कलर शीट आदि को उपयोग में लेकर विविध माध्यमों में कलाकृतियों का निर्माण किया है। न केवल चित्रकार अपितु कला समीक्षक एवं संस्थापक कलाकार के रूप में भी ऋतु जोहरी कला जगत में खासी पहचान रखती है। कला के क्षेत्र में विभिन्न योगदान के लिए इन्हें देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इनके द्वारा लिखित भारतीय कला समीक्षा पुस्तक भी कला के क्षेत्र में अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज है। वर्तमान में यह जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में कला के छात्रों को प्रोफेसर के रूप में अपना मार्गदर्शन प्रदान कर रही हैं।

कृष्णा महावर का जन्म 1978 में राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में हुआ है। इन्होंने ड्राइंग एंड पेंटिंग में स्नातकोत्तर की उपाधि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर से प्राप्त की है तथा स्नातकोत्तर उपाधि के अंतर्गत स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। यह चित्रकार के साथ-साथ कला शिक्षक के रूप में भी अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराती रही हैं। 20 वर्षों से भी अधिक समय तक चित्रकार एवं कला शिक्षक दोनों ही रूप में अपना विस्तृत अनुभव रखती हैं। इन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी का राज्य पुरस्कार से दो बार सम्मानित किया जा चुका है तो वही राज्य स्तर पर आयोजित कला मेले में कला मेला अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है। इनके चित्रों की प्रदर्शनी राजस्थान के विविध क्षेत्र यथा कोटा, जयपुर, उदयपुर आदि में लगी है तो वही देश के विभिन्न क्षेत्रों नई दिल्ली, मुंबई, इलाहाबाद में भी अपनी कलात्मक उपस्थिति दर्ज करा चुकी हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई कार्यक्रम में इन्होंने कलाकार के रूप में अपनी सृजनधर्मिता का परिचय दिया है। न केवल चित्रकार अपितु लेखिका तथा संस्थापन कलाकार के रूप में भी सजन के क्षेत्र में जानी जाती हैं।

राजस्थान के अजमेर में 1981 में जन्मी एक अन्य महिला चित्रकार भुवनेश्वरी राजोरिया ने भी चित्रकला के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की है। इन्होंने 2004 में वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान से दृश्य कला स्नातकोत्तर में गोल्ड मेडलिस्ट के रूप में अपनी शिक्षा पूरी की है। इनकी कलाकृतियां राजस्थान के विभिन्न क्षेत्र में प्रदर्शित होती रही है तो चंडीगढ़, गुजरात, नई दिल्ली में भी इनकी कलाकृतियां प्रदर्शित की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त विदेश में हंगरी बुडापेस्ट में अंतर्राष्ट्रीय सामूहिक प्रदर्शनी में भी इन्होंने अपनी उपस्थिति दी है। वही कला के क्षेत्र में उनके कार्यों को देखते हुए 2004 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा स्टूडेंट स्कॉलरशिप दी जा चुकी है। इनके द्वारा जलरंग से निर्मित दृश्य चित्र कला प्रेमियों को आकर्षित करने की क्षमता रखती हैं।

1991 जन्मी तस्लीम जमाल ने परतापुर, बांसवाड़ा से ड्राइंग एंड पेंटिंग में स्नातकोत्तर किया है। इनके द्वारा निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी जयपुर, चंडीगढ़, उदयपुर, दिल्ली, भीलवाड़ा, भोपाल, अजमेर, बांसवाड़ा आदि देश-विदेश के विभिन्न कोनों में आयोजित की जा चुकी है इसके अतिरिक्त कुवैत में भी इनके द्वारा सामूहिक प्रदर्शनी के अंतर्गत अपने चित्रों को प्रदर्शित किया गया है। तस्लीम जमाल युवा चित्रकार है जो समकालीन कला जगत में अपने चित्रण की विशिष्ट शैली से कला प्रेमियों के मध्य आकर्षण का खासा केंद्र बनी हुई है।

इन महिला कलाकारों के अतिरिक्त अन्नपूर्णा शुक्ला, अर्चना जोशी, दीपिका हाजरा, किरण मुर्डिया, ममता चतुर्वेदी, मंजू मिश्रा, मीना बया, मीनाक्षी भारती, मीनू श्रीवास्तव, संगीता जुनेजा, सुरजीत कौर चौयल के भी वृहद कलात्मक इतिहास को देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न संस्थानों से निकलकर काम करने वाले तथा राजस्थान की महिला चित्रकार देश विदेश के विभिन्न भागों में अपना कलात्मक योगदान दे रही हैं।

इस प्रकार यदि राजस्थान के कलात्मक परिदृश्य में देखें तो महिला चित्रकारों ने भी अपने रचनात्मक योगदान से राजस्थान की कला एवं संस्कृति को आगे, बढ़ाने का कार्य किया है।

REFERENCES

1. डॉ. ममता चतुर्वेदी: समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2022

2. डॉ. देवदत शर्मा : कला कीर्तिका, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2022

3. कलाकारों के साक्षात्कार से साभार

लेखक द्वय

1. भूपत राम - कलाकार एवं शोधार्थी, ललित कला विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

2. प्रो. ऋतु जौहरी, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर